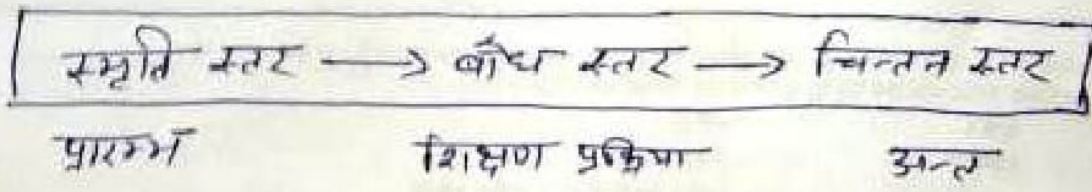
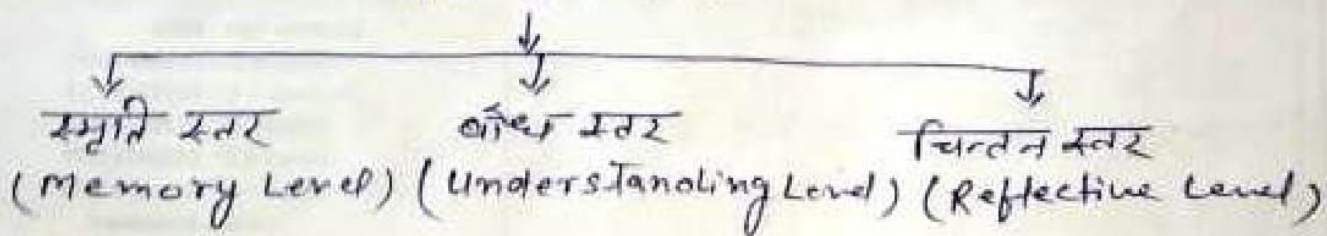


Reflective-teaching. चिन्तन-शिक्षण

Reflective Level of teaching. (चिन्तन-स्तर पर शिक्षण)

शिक्षण कक्षा में विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करने की एक व्यवस्था है। जिसका उद्देश्य छात्रों को सीखने के लिये प्रेरित करना है। शिक्षण के उद्देश्य आत्मन्य स्पष्ट होने चाहिये तभी शिक्षक प्रभावशाली साधनों का प्रयोग कर इसे अधिक शक्तिमान बना सकता है। शिक्षण प्रक्रिया के अन्तर्गत 'पाठ्यवस्तु' एक महत्वपूर्ण उपागम है, जिसके ~~बिना~~ बिना शिक्षण नहीं हो सकता। "एक ही पाठ्यवस्तु को शिक्षण उपागम परिस्थितियों विचारहीन से लेकर विचारपूर्ण स्थिति तक ले जा सकती है।" अतः शिक्षण की प्रक्रिया की परिस्थितियों को इस एक सतत क्रम पर ~~विचार~~ विचारों की व्यवस्थाओं या स्तरों में विभाजित कर सकते हैं। इसी शब्दों में हम कह सकते हैं कि शिक्षण की पूर्ण प्रक्रिया को निम्न-लिखित तीन स्तरों में विभाजित किया जा सकता है।

शिक्षण के स्तर



Reflective-teaching - (चिन्तन-शिक्षण)

चिन्तन मानव के विकास का महत्वपूर्ण पद है। इस स्तर पर शिक्षक अपने छात्रों में चिन्तन, तर्क तथा कल्पना शक्ति को बढ़ाता है ताकि बाद में ये छात्र इन उपागमों के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान कर सकें। इस स्तर पर शिक्षण में स्मृति तथा बोध्य दोनों स्तरों का शिक्षण निहित होता है। इसके अभाव में चिन्तन स्तर का शिक्षण सफल नहीं हो सकता।



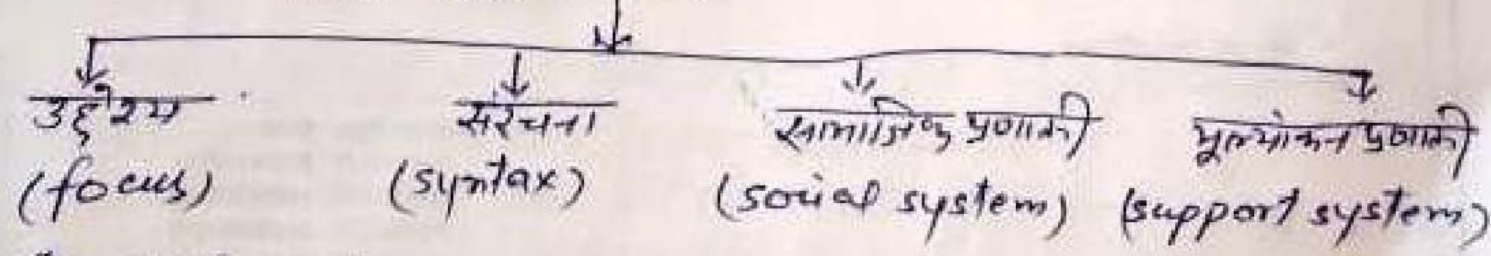
चिन्तन-स्तर पर शिक्षण सामरस्य-केन्द्रित होती है। शिक्षण क्षेत्रों के सामने बड़े सम्बन्धित उच्चतर सामरस्य प्रस्तुत करता है जिस पर छात्र सक्रिय व अभिप्रेरित होकर स्वयं चिन्तन प्रारम्भ कर देते हैं। यह चिन्तन आलोचनात्मक इतिहास वाला मौलिक चिन्तन होता है। इस प्रकार के शिक्षण में छात्रों के कोष-व्यापार को बड़े विस्तार करने के अर्थ में इसे शिक्षण का कार्य है उनमें सृजनात्मक क्षमताओं का विकास करना। यह शिक्षण का सर्वोच्च स्तर है और पूर्णतया विचारवान है। इस प्रकार के शिक्षण में छात्र अपनी अभिव्यक्ति, धारणा, विचार, मान्यता तथा ज्ञान के अनुसार सामरस्य-समाधान के लिए विचार तथा तर्क करते हुए नवीन ज्ञान की खोज करते हैं। यह एक उत्पादन स्थिति है जिसमें निर्माण, खोज, शोध व सृजन को जन्म दिया जाता है।

इस स्तर पर छात्र स्वयं रुचि लेकर, स्पष्टता से चिन्तन, मनन, तर्क व कल्पना करते हुए सामरस्य का समाधान खोजते हैं। और स्वयं को अधिक आत्म-विश्वास वाला, डिपार्टीट तथा सक्रिय छात्र बनाते हैं। इस स्तर पर शिक्षणार्थ, शिक्षकों को योग्य, अनुभवी, विषय तथा विद्या विशेषज्ञ तथा प्रभावशाली बनाने चाहिए।

द्वि-पक्ष

इस स्तर पर शिक्षण हेतु दृष्ट-मैदीय का शिक्षण प्रतिमान वांछनी प्रचलित है, जो इस प्रकार है -

शिक्षण प्रतिमान-पक्ष



(1) उद्देश्य (focus) -

- (1) छात्रों में मौलिक व स्वतन्त्र चिन्तन शक्ति का विकास करना।
- (2) छात्रों में सामरस्य-समाधान हेतु आलोचनात्मक तथा सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का विकास करना।